Shri Mangal Chandika Mantra And Stotram

श्रीमंगलचण्डिका मंत्र एवं स्तोत्रम्

GURUDEV RAJ VERMA

Contact- +91-9897507933, +91-7500292413(WhatsApp No.)

Email- mahakalshakti@gmail.com

For more info visit---

www.scribd.com/mahakalshakti

www.gurudevrajverma.com

ध्यानम्- देवीं षोडशवर्षीयां शश्वत्सुस्थिरयौवनाम्। सर्वरूपगुणाढ्यां च कोमलांगीं मनोहराम्।।

श्वेतचम्पकवर्णाभां चन्द्रकोटिसमप्रभाम्। वह्निशुद्धांशुकाधानां रत्नभूषणभूषिताम्।।

बिभ्रतीं कबरीभारं मल्लिकामाल्यभूषितम्। विम्बौष्ठीं सुदतीं शुद्धां शरत्पद्मनिभाननाम्।।

ईषद्धास्यप्रसन्नास्यां सुनीलोत्पललोचनाम्। जगद्धात्रीं च दात्रीं च सर्वेभ्यः सर्वसम्पदाम्।।

संसार सागरे घोरे पोतरूपां वरां भजे। देव्याश्च ध्यानमित्येवं स्तवनं श्रूयतां मुने।। प्रयतः संकटग्रस्तो येन तुष्टाव शंकरः।

मंत्र- 'ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं सर्वपूज्ये देवि मंगलचण्डिके ऐं क्रूं फट् स्वाहा।' देवीभागवत् में 47वें अध्याय में 'ऐं क्रूं' के स्थान पर 'हूं हूं' है।

स्तोत्र- महादेव उवाच- रक्ष-रक्ष जगन्मातर्देवि मंगलचण्डिके। हारिके विपदां रार्शेहर्षमंगलकारिके।।

हर्षमंगलदक्षे च हर्षमंगलचण्डिके। शुभे मंगलदक्षे च शुभमंगलचण्डिके।।

मंगले मंगलार्हे च सर्वमंगलमंगले। सतां मंगलदे देवि सर्वेषां मंगलालये।।

पूज्या मंगलवारे च मंगलाभीष्टदैवते। पूज्ये मंगलभूपस्य मनुवंशस्य संततम्।।

मंगलाधिष्ठातृदेवि मंगलानां च मंगले। संसार मंगलाधारे मोक्षमंगलदायिनी।।

सारे च मंगलाधारे पारे च सर्वकर्मणाम्। प्रति मंगलवारे च पूज्ये मंगलप्रदे।।

स्तोत्रेणानेन शम्भुश्च स्तुत्वा मंगलचण्डिकाम्। प्रतिमंगलवारे च पूजां कृत्वा गतः शिवः।।

देव्याश्च मंगल स्तोत्रम् यः श्रृणोति समाहितः। तन्मंगलम् भवेच्छश्वन्न भवेत् तदमंगलम्।।

इस स्तोत्र से स्तुति करके भगवान् शंकर ने देवी मंगलचण्डिका की उपासना की। भगवती सर्वमंगला सर्वप्रथम भगवान् शंकर से पूजित हुईं। इनके दूसरे उपासक मंगलग्रह हैं। तीसरी बार राजा मंगल ने तथा चौथी बार मंगल के दिन कुछ सुन्दर स्त्रियों ने इन देवी की पूजा की। पांचवी बार मंगल की कामना रखने वाले बहुसंख्यक मनुष्यों ने मंगलचण्डिका का पूजन किया। इसके उपरान्त् विश्वेश शंकर से सुपूजित भगवती मंगला सम्पूर्ण विश्व में सदा पूजित होने लगीं। जो पुरुष एकाग्रतापूर्वक भगवती मंगलचण्डिका के इस पावन स्तोत्र का श्रवण करता है, उसका समस्त प्रकार से मंगल होता है। इनकी उपासना से मंगल ग्रह जनित दोष शान्त होते हैं एवं विवाह अवरोधक दोष समाप्त होते हैं। मंगलवार से इनके मंत्र अथवा स्तोत्र का विधिवत् अनुष्ठान आरम्भ करें। इनके पूजन में पुष्प, चन्दन एवं अन्य समस्त सामग्री रक्तवर्ण की प्रयोजनीय है। अन्य आवश्यक विधान गुरुमुख से प्राप्त करें।

Books Written by Gurudev Shri Raj Verma ji

- Divya Mantra Sadhana Evam Siddhi

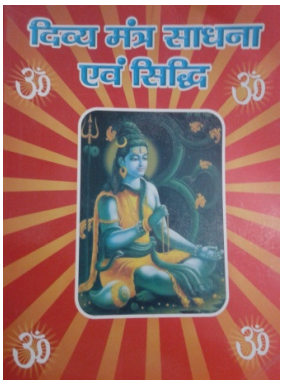

- Shri Baglamukhi Divya Sadhana